बरगदानाथ

एक बरगद की आत्मकथा

दीपक कुमार पाण्डेय

बरगदानाथ

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:978-93-6026-566-3

Price: ₹ 224.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

बरगदानाथ

(एक बरगद की आत्मकथा)

By

दीपक कुमार पाण्डेय

यह एक काल्पनिक कहानी है। जिसका किसी घटना, धर्म या समुदाय से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि इसकी किसी घटना ,धर्म या समुदाय से कोई समानता पाई जाती है तो यह केवल एक संयोग होगा और कुछ नहीं।

पूज्य माताजी एवं पिताजी
को सादर समर्पित

प्रस्तावना

बरगदानाथ कहानी बरगद के जीवन पर आधारित एक काल्पनिक कथा है। जिसका नाम बरगदानाथ है। बरगदानाथ मानवों की बीच रहकर अपनी जिंदगी गुजार रहा है। उसे बरगदों के इतिहास और पूर्वजों के बारे में जानने की बड़ी इच्छा है । बरगदानाथ को अपने दादाजी तथा मानवों की गतिविधियों से काफी कुछ सीखने को मिलता है। समय के साथ उसे बरगदों के धर्म–कर्म अर्थात वटधर्म के बारे में पता चलता है। मानवों के साथ कई वर्षों से साथ रहने के कारण बरगदानाथ को उनसे बहुत लगाव है।

बरगदानाथ को बरगदों के इतिहास और वटधर्म के बारे में ज्ञान तो हो जाता है परन्तु क्या वह उसे अपने जीवन में उतार पाता है? मानवों के सानिध्य में रहने से उसे किन–किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है?. ....इन प्रश्नों के सभी उत्तर आपको पूरा पुस्तक पढ़ने के बाद ही मिलेगा।

आमुख

बरगदानाथ मेरी पहली कहानी है। हालाँकि मैंने इसके पहले 4 पुस्तकें लिख चुका हूँ। परन्तु मैंने कभी कोई कहानी नहीं लिखी। मैं अपने जीवन में सबसे ज्यादा जिससे प्रभावित रहा हूँ वह है– श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थ। यह सभी महान ग्रन्थों में से एक है। श्रीमद्भगवद्गीता नामक ग्रन्थ कुरुक्षेत्र युद्ध में श्रीकृष्ण भगवान द्वारा अपने प्रिय सखा अर्जुन को दिए दिव्यज्ञान का वर्णन करता है। मैं उसी श्रीमद्भगवद्गीता के दर्शन को हमेशा अपने जीवन और अपनी रचनाओं में उतारने का प्रयास करता रहता हूँ।

चूँकि बरगदानाथ एक काल्पनिक कथा है। फिर भी आपको इस कहानी में श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ तत्वज्ञान मिलेंगे। इस पुस्तक को लिखने का मूल उद्देश्य कहानी के माध्यम से बरगद वृक्ष की महानता के बारे में वर्णन करना ळें

कहानी लिखने के लिए प्ररित करने वाले सभी सहयोगियों, मित्रगण और गुरुजन्वृन्दों का बहुत–बहुत धन्यवाद। आशा करता हूँ कि यह रचना आप सभी पाठकगण को अवश्य पसंद आयेगी।

बहुत बहुत धन्यवाद।

(दीपक कुमार पाण्डेय)

रचनाकार का परिचय

दीपक कुमार पाण्डेय मेकॅनिकल इंजिनियरिंग से ग्रेजुएट तथा प्रबंधन में पीजी है। वर्तमान में वे भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, नागपुर मे सहायक अभियंता के रूप में कार्यरत है। उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकें है–

1. **भास** (लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में पंजीकृत)
2. **भारत गणराज्य पद्यावली** (लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में पंजीकृत)
3. **प्रणाम महात्मा** (इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स में पंजीकृत)
4. **मेरी सोलह कविताएं**

आज की तिथि तक श्री दीपक कुमार पाण्डेय के नाम साहित्य के क्षेत्र में 9 विश्व रिकार्ड्स पंजीकृत हो चुके है। जिनके नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, वर्ल्ड रिकॉर्ड्स इण्डिया, यूनीक वर्ल्ड रिकार्ड्स, एशिया बुक ऑफ रिकार्ड्स, इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स आदि है।

पुस्तक का परिचय

मुझे वट भी कहते हैं। मेरा वैज्ञानिक नाम फाइकस वेनगैलेंसिस है। मुझे जीवंत करने एवं ग्रीष्म काल में मेरे मूल में पानी देने से पुण्य का संचय होता है। मेरी शाखाओं से मूल निकलते ही जमीन में पहुंचकर स्तंभ का रूप ले लेती हैं। जिससे मैं बहुत तीव्र गति से विकास करता हूँ। कुछ लोग मुझे जटाजूट भी कहते है। मैं मघा नक्षत्र का प्रतीक भी हूँ। मुझे अपने बारे में इतना बताना काफी है क्योकि कोई मानव ऐसा नही होगा जो अपने पूरे जीवनकाल में मुझसे कभी ना मिला हो।

बरगदानाथ पुस्तक को लिखने का मूल उद्देश्य बरगद के वृक्ष की उपयोगिता एवं महानता का वर्णन करना है।

विषय सूची

क्र.	अध्याय	पृष्ठ क्र.
1.	मैं कौन हूँ	1
2.	लाचार किसान	5
3.	तीन चोर	21
4.	प्राचीन वट कथा	28
5.	अष्टादश सिद्धि	37
6.	अक्षयवट	47
7.	परकायाप्रवेशनम्	55
8.	वटधर्म	62
9.	प्रायश्चित	72
10.	सिद्धस्थ बरगदानाथ	80
11.	वट मूले तपोवासा	84
12.	रागद्वेष	87
13.	धर्मसंकट	96
14.	कबाड़ी वाला	99
15.	उचित न्याय	109
16.	उद्देश्य पूरा हुआ	118
17.	महानिर्वाण	121

मैं कौन हूँ

वैसे मैं तो अपने जीवन का 226 सावन देख चुका हूँ। परंतु कोई भी मुझे बूढ़ा या उम्र दराज नही कह सकता। मेरी प्रजाति में ये सामान्य उम्र मानी जाती है। मेरे परदादा के परदादा या शायद उनको लकड़दादा कहना ठीक होगा, ने तो हजार साल भी पार कर लिए है। मैं उनके सामने तो बिल्कुल एक छोटा बच्चा ही हूँ। फिर भी मुझे अपनी उम्र और तजुर्बे का बहुत अभिमान है। इस इलाके का मैं ही दादा हूँ विशालता में भी, उम्र में भी। और हाँ मेरे अंदर एक और खूबी है – मैं अपने चारो तरफ देख सकता हूँ लेकिन तुम मुझे ब्रह्मा नही कह सकते। जिनके चार सर है और जो चारो तरफ देख सकते है। मैं इस धरती का ही हूँ। पिछली सदियों में मेरा सम्मान केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही था। पर क्या कहते है उसे अँग्रेजी में ……… हाँ…. ग्लोबल वार्मिंग, इसी के चलते वर्तमान में मानवों ने मुझे महान बना दिया है।

जो भी हमारी जाति के वृक्षों को दार्शनिक दृष्टि से देखता है। वह हमें दीर्घायु व अमरत्व–बोध के प्रतीक के रूप में मानता है और स्वीकार भी करता है। मैं ज्ञान का भी द्योतक हूँ और निर्वाण का भी। मुझे पूजने वाला ज्ञानी बनता है और उसको ज्ञान का बोध होता है। इस बात को ईश्वर ने स्वयं कहा है।

आज के ठीक 226 साल पहले इसी धरती पर उगा। मैं शुरुआती तीन वर्षों तक वर्षा–धूल के काफी थपेड़े खाए। फिर जाकर मेरे अंदर संवेदनशीलता आई और मैं जानने–समझने योग्य हो गया। क्योकि ये बात तुम लोग जान लो कि कोई पौधा तभी पेड़ कहलाता है, जब वह अपने जीवन के तीन वर्ष पूरा कर चुका हो। पेड़ों की दुनिया में तीन साल बाद ही सोचने समझने का गुण आता है। उसके पहले तो हमारे शरीर में परिपक्वता ही नही होती, बोलना तो बहुत दूर की बात है। अब तुम लोग समझ ही गये होगे कि मैं कौन हूँ जी हाँ .... सही पहचाना .... मैं एक पेड़ हूँ। अब आप लोग लोग पूछेंगे किसका? अरे भई जिसकी उम्र हजारों साल तक होती हो तो उसका बरगद का पेड़ होना स्वाभाविक है।

मुझे वट भी कहते हैं। मेरा वैज्ञानिक नाम फाइकस वेनगैलेंसिस है। मुझे जीवंत करने एवं ग्रीष्म काल में मेरे मूल में पानी देने से पुण्य का संचय होता है। मेरी शाखाओं से मूल निकलते ही जमीन में पहुंचकर स्तंभ का रूप ले लेती हैं। जिससे मैं बहुत तीव्र गति से विकास करता हूँ। कुछ लोग मुझे जटाजूट भी कहते है। मैं मघा नक्षत्र का प्रतीक भी हूँ। मुझे अपने बारे में इतना बताना काफी है क्योकि कोई मानव ऐसा नही होगा जो अपने पूरे जीवनकाल में मुझसे कभी ना मिला हो।

उत्तर प्रदेश राज्य का जौनपुर जिला काफी पुराना माना जाता है। आज भी यह जिला भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को संजोए हुए है। भारत की यह भूमि सदा ही नये–नये विलक्षण प्रतिभा वाले विभूतियों को जन्म देतीं रहीं है। जिनमें से मैंने कईयों को देखा और जाना है। लेकिन मनुष्यों और अन्य प्राणियों से परे पेड़ों की भी एक अलग दुनिया होती है। जन्म के पश्चात तीन वर्ष तक पश्चात संघर्ष करों तभी जाकर परिपक्वता आती है।

जो अभी बोल रहे थे ये है –बरगदानाथ। जो जौनपुर जिले के सिरकोनी बाजार के बीचोंबीच शहंशाह ही तरह अपनी जड़े जमाए हुए है। इलाके में सबसे पुराने एवं हरे–भरे पेड़ होने की वजह से बरगदानाथ की काया वास्तव में देखने योग्य है। यह एक हरियाली का एक छोटा पर्वत है। बरगदानाथ भी स्वयं को इसी जिले की विभूतियों में से एक मानते है। मानते क्यों नही, अतीत की सैकड़ों घटनाए उनके साथ जो जुड़ी थी। यह विशाल बरगद का पेड़ उत्तर प्रदेश राज्य में जौनपुर जिले के पिछली दो सदियों के इतिहास से भलीभाँति परिचित था।

सिरकोनी का यह बाजार जौनपुर से बनारस को जोड़ने वाली राष्ट्रीय राजमार्ग 56 पर पड़ता है। इसी सड़क के किनारे बरगदानाथ अपना घर जमाये हुए थे। सैकड़ों मोटर–गाड़ियाँ तेज रफ्तार जब सड़क से निकलती थी तो बरगदानाथ की शरीर में ऐसे हलचल मचा देती थी। ऐसा लगता था कि गाड़ियाँ शायद अपनी गतिशीलता का नमूना दिखाकर बरगदानाथ को चिढ़ा रही हों। लेकिन बरगदानाथ को इन गाड़ियों की गतिशीलता से कोई ईष्या नही थी। वो तो बस अपने की धुन में हमेशा मगन रहते थे। बरगदानाथ जब पैदा हुए तब ना सड़क थी ना ही बाजार। पर आज जनसख्या वृद्धि और शहरीकरण ने उनहे मानवों के बीच खड़ा कर दिया था।

आज बरगदानाथ मानवों के ज्यादा करीबी थे ना कि वनस्पतियों के। मानवों के इतने नजदीक होने के कारण बरगदानाथ को मानवों की भाषा भली भाँति समझ में आती थी। किंतु उनसे बात करने में असक्षम थे। पेड़ों से बात करने का गुण बरगदानाथ में जन्मजात था।

सिरकोनी बाजार में वैसे तो पेड़ों की कई प्रजातियाँ है। फिर भी वहां बरगदानाथ से पुराना कोई ना था। वहाँ जो भी पेड़ थे वो बरगदानाथ से कुछ दूरी पर थे।

बरगदानाथ

एक बरगद की आत्मकथा

लेखक के बारे में

दीपक कुमार पाण्डेय मेकॅनिकल इंजिनियरिंग से ग्रेजुएट तथा प्रबंधन में पीजी है। वर्तमान में वे भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, नागपुर मे सहायक अभियंता के रूप में कार्यरत है। उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकें है–

1.भास (लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में पंजीकृत)
2.भारत गणराज्य पद्यावली (लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में पंजीकृत)
3.प्रणाम महात्मा (इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स में पंजीकृत)
4.मेरी सोलह कविताएं

आज की तिथि तक श्री दीपक कुमार पाण्डेय के नाम साहित्य के क्षेत्र में 9 विश्व रिकार्ड्स पंजीकृत हो चुके है। जिनके नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, वर्ल्ड रिकॉर्ड्स इण्डिया, यूनीक वर्ल्ड रिकार्ड्स, एशिया बुक ऑफ रिकार्ड्स, इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स आदि है ।

वृहतसंहिता के अनुसार घर के पूर्व दिशा में बरगद का वृक्ष लगाना शुभ माना जाता है । पाठकगणों से अनुरोध है वे अपने जीवन में कम से कम एक बरगद का पेड़ अवश्य लगायें ।

लेखक से संपर्क हेतु:
dkpbhel@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-93-6026-566-3
9 789360 265663